फर्म/उत्पादक का उद्देश्य व संतुलन (Objectives and Equilibrium Firm)

फर्म का अर्थ:

एक व्यक्तिगत इकाई, जो किसी वस्तु का उत्पादन या विक्रय करती है, को फर्म कहते है।

हैंडरसन के अनुसार, "एक फर्म वह तकनीकी इकाई है जहां वस्तुए उत्पादित की जाती है।"

उत्पादक एक आर्थिक एजेंट है जो उत्पत्ति के साधनों को एकत्रित करके अधिकतम संभव लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन करता है।

फर्म की विशेषताएं

- स्वरुप (Form)
- आकार (Size)
- क्रय (Purchase)
- प्रावैगिक (Dynamic)

उत्पादक फर्म का उद्देश्य

- अधिकतम कुल लाभ
- अधिकतम कुल विक्रय
- न्यूनतम लागत
- वित्तीय सुदृढ़ता
- दीर्घकालीन अस्तित्व
- आर्थिक आत्मनिर्भरता
- व्यावसायिक साम्राज्य

उत्पादक या फर्म का संतुलन

एक उत्पादक उस समय साम्य में होता है जब उसकी आय अधिकतम होती है तथा हानियां न्यूनतम होती है।

इस प्रकार एक फर्म साम्य की स्थिति में तब कही जाएगी जबकि उसके कुल उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई परिवर्तन नहीं हो।

प्रो. हैन्सन के अनुसार, *"एक फर्म उस समय संतुलन में होगी जब उत्पादन में कमी करना या वृद्धि करना उसके लिए लाभकारी नहीं होगा"।*

मैकोनल के अनुसार, ***"अल्पकाल में एक फर्म उस समय संतुलन में होती है जब उस मात्रा का उत्पादन करती है जिस पर उसके लाभ अधिकतम होते हैं तथा हनियां न्यूनतम होती है"।***

इस प्रकार फर्म के साम्य की अवस्था की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

1. संतुलन का अर्थ है परिवर्तन का अनुपस्थित होना अर्थात इस स्थिति में फर्म अपनी कीमत या उत्पादन की मात्रा में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहती।
2. फर्म परिवर्तनहीनता की स्थिति में उस समय पहुंचती है, जबकि उसे अधिकतम लाभ प्राप्त होता है।
3. संतुलन की व्यवस्था में फर्म की उत्पादन लागत न्यूनतम होती है।

उत्पादक संतुलन की रीतियाँ

उत्पादनक / फर्म संतुलन की दो प्रमुख रीतियां प्रचलन में है:

1. कुल आगम (TR) एवं कुल लागत (TC) रीति
2. सीमांत आगम (MR) एवं सीमांत लागत (MC) रीति

कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति द्वारा उत्पादक का संतुलन

इस रीति में उत्पादन के भिन्न भिन्न स्तरों पर कुल आगम एवं कुल लागत का अंतर ज्ञात किया जाता है। कुल लागम और कुल लागत का अंतर कुल लाभ को बताता है।

लाभ = कुल आगम - कुल लागत

उत्पादन के अलग अलग स्तरों पर TR तथा TC का अंतर अलग अलग होता है। एक उत्पादक का कुल लाभ तभी अधिकतम होता है जब TR तथा TC का अंतर अधिकतम हो।

अतः, उत्पादक का संतुलन उत्पादन के उस स्तर पर होता है जब कुल आगम एवं कुल लागत का अंतर अधिकतम हो जाए।

पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादक अथवा फर्म का संतुलन

पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म दी गई कीमत पर वस्तु की कितनी ही मात्रा का उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत, प्राप्तकर्ता एवं मात्रा नियोजक होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता में कुल आगम (TR) वक्र बाएँ से दाएँ चढ़ती हुई सीधी रेखा होगा, जबकि कुल लागत (TC) वक्र पहले कम होता है, फिर ऊपर की ओर चढ़ता हुआ होता है।

जिस बिंदु पर TR, TC से अधिकतम होगा वही बिन्दु उत्पादक संतुलन का होता है।

गैर पूर्ण प्रतियोगिता (एकाधिकार एवं एकाधिकारी प्रतियोगिता) में उत्पादक अथवा फर्म का संतुलन

गैर पूर्ण प्रतियोगिता में एक उत्पादक अधिक तभी बेच सकता है जब वहाँ कीमत कम करें। यही कारण है कि ऐसी प्रतियोगिता का कुल आगम (TR) वक्र बाएँ से दाएँ ऊपर चढ़ता हुआ होता है, किंतु घटती दर से क्योंकि जैसे जैसे अधिक विक्रय होता जाता है कुल आगम की वृद्धि घटती जाती है।

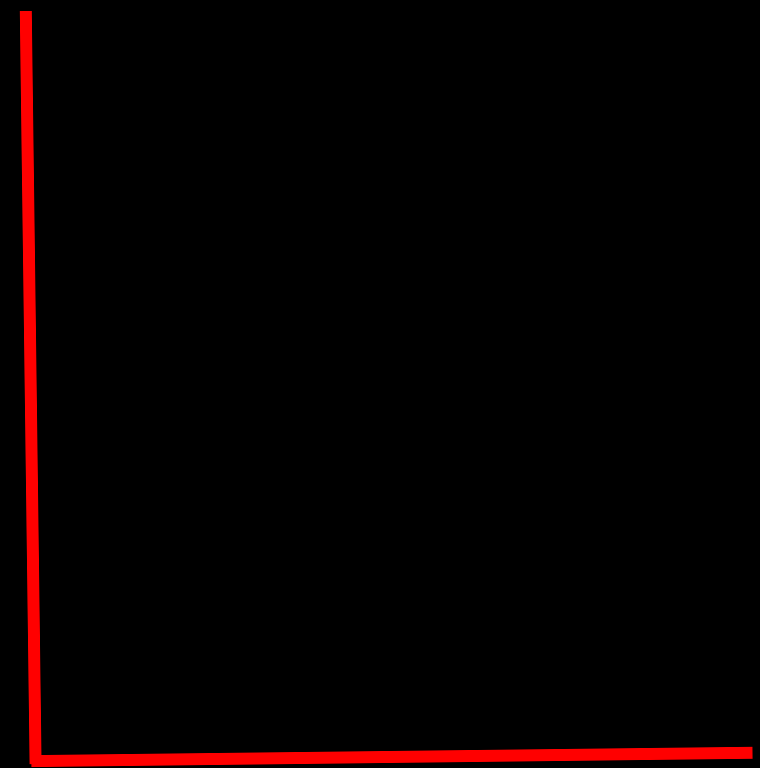

सीमांत आगम (MR) एवं सीमांत लागत (MC) वक्र रीति द्वारा उत्पादक का संतुलन

इस रीति में विभिन्न उत्पादन स्तरों पर सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) का अंतर ज्ञात किया जाता है।

सीमान्त आगम तथा सीमांत लागत का अंतर लाभ को प्रदर्शित करता है।

जब सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) से अधिक है तब उत्पादन में वृद्धि लाभप्रद है। जब MR तथा MC बराबर होते है उस बिंदु पर लाभ अधिकतम होता है। और इसे समविच्छेद बिंदु कहा जाता है। जबकि जब सीमांत लागत सीमांत आगम से अधिक हो तब उत्पादक को हानि होगी।

इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादनक या फर्म के संतुलन के लिए दो प्रमुख शर्तें हैं:

1. MR = MC
2. सीमांत लागत वक्र (MC) सीमांत आगम वक्र (MR) को नीचे से काटे।

चित्र

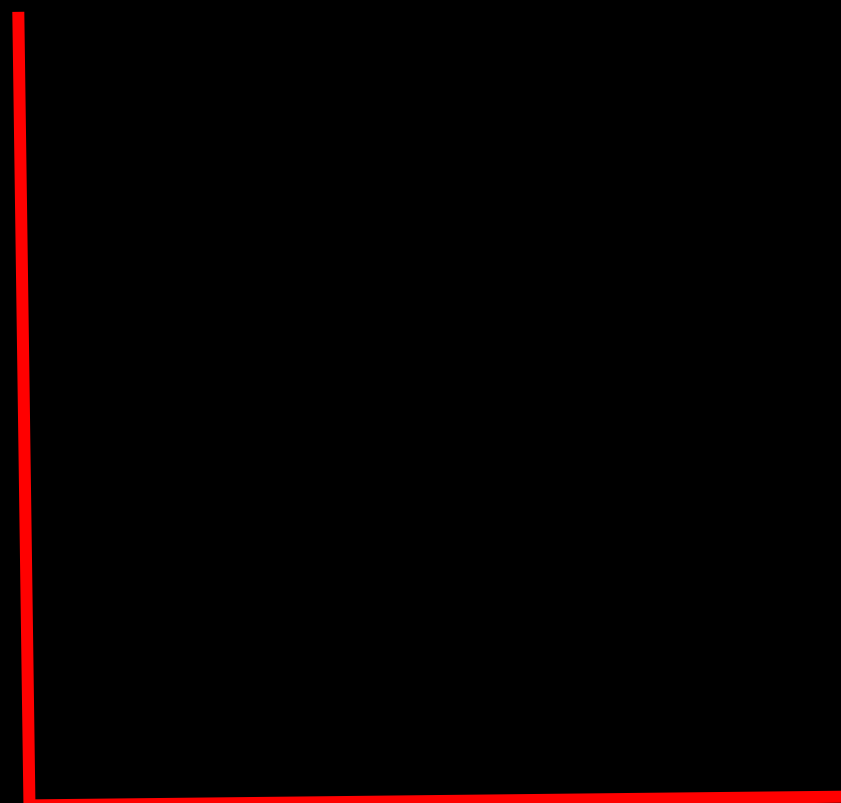

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE & SHARE
The Video
And
SUBSCRBE
YouTube CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com